



ईमानदारी जो उपचार करती है Honesty that heals

Author- Robert Van Der Like

Christian Science Sentinel

Vol 114, No. 45, Nov 5, 2012

बहुत देर तक, मैंने ईमानदारी को केवल झूठ न बोलना ही माना । लेकिन अब मैंने यह महसूस किया कि ईमानदारी की परिभाषा इस से कहीं ज्यादा गहरी है । मैं अब देखता हूँ कि इसका अर्थ यह भी है कि झूठ को स्वीकार न करना ।

क्रिश्चियन साँयस सिखाती है कि उपचार तभी होता है जब कोई किसी स्थिति के बारे में सत्य को समझ जाता है। मेरी बेकर ऐडी लिखती हैं “हमें यह स्मरण करना होगा कि सत्य* प्रत्यक्षीकृत होता है जब समझ आ जाता है, और यह कि अच्छाई समझी नहीं जा सकती जब तक प्रत्यक्षीकृत न हो” (साँयस एंड हैल्थ विद की टू स्क्रिपचर्स, पृष्ठ 323)। दूसरे शब्दों में वास्तव में ईमानदार होने का अर्थ है सत्य को बेहतर समझने के लिए सत्य की एक आध्यात्मिक समझ को प्राप्त करना ।

यह एक तथ्य है कि मानव परमेश्वर के रूप तथा प्रतिरूप में बनाया गया था और है (देखें उत्पत्ति 1:26, 27) – अच्छाई, सेहत तथा पवित्रता के प्रतिरूप में। और केवल यह ही नहीं – हम उसके बारे में सचेत हैं जो परमेश्वर हमारे अस्तित्व के बारे में लगातार जान रहा है । यह हमारी पहचान का हिस्सा है उसे जानना जिस तरह से परमेश्वर हमें देखता है । इस लिए मानव का सच्चा या ईमानदार दृष्टिकोण परमेश्वर का दृष्टिकोण है।

मेरी बेकर ऐडी लिखती हैं “जिसने ने साँयस में सम्पूर्ण मानव को देखा जो उन्हें वहाँ दिखाई दिया जहाँ नश्वरों को पाप करता हुआ नश्वर मानव दिखाई देता है। इस सम्पूर्ण मानव में मुक्तिदाता ने परमेश्वर का अपना प्रतिरूप देखा, और मानव के इस सही दृष्टिकोण ने बीमार का उपचार किया” (साँयस एंड हैल्थ, पृष्ठ 476 – 477)। यह ईमानदारी की उससे भी ज्यादा गहन धारणा है जो मैंने पहले सोची थी। मैं क्या सोच रहा हूँ, के बारे में ईमानदार होना महत्वपूर्ण है, परन्तु गहन ईमानदार होने के लिए, मुझे परमेश्वर के अपने प्रतिरूप में सम्पूर्ण मानव को देखना होगा। यह एक मुश्किल कार्य प्रतीत हो सकता है। परन्तु यह हमारी पहचान का हिस्सा है हमारे बारे में परमेश्वर के दृष्टिकोण, मानव के सही दृष्टिकोण के बारे में सचेत होना। यह हमें आशा देता है ।

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see <http://translations.christianscience.com>

Translation © 2013 The Christian Science Publishing Society

This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

ईमानदारी की इस नवीन तथा गहन धारणा के साथ, हर कोई आसानी से देख सकता है क्यों हमें दूसरों की या अपने आप की आलोचना या निन्दा नहीं करनी चाहिए। अगर हमें ईमानदार होना है, हमें मानव के सही, सच्चे दृष्टिकोण के प्रति वफादार होना होगा। परन्तु, क्या इसका अर्थ यह है, हमें 'एक मानव को उसकी गलतियां कभी नहीं बतानी चाहिए? मत्ती की नियम संहिता के बारे में क्या कहोगे (देखें मत्ती 18: 15-17)? हम धार्मिकता से तथा ईमानदारी से कैसे आँकते हैं जब हम किसी को प्रत्यक्ष रूप से या जान-बूझ कर भी पाप करते हुए देखते हैं? हमारा कार्य यकीनन उस व्यक्ति के पास जाना तथा उसे दिखाई देने वाली गलती के बारे में बताना हो सकता है (वस्तुतः, उतने प्यार से जितना हम कर सकते हैं।) हमें किसी को स्पष्ट रूप से भी बोलने की जरूरत पड़ सकती है जो यह भी महसूस नहीं करता कि उसके कार्य दिशाहीन हैं, एक कार्य जिसके बारे में एडी कहती हैं "जिसे हमारे आशीषित स्वामी की प्रेरणा की जरूरत होती है" (साँयस एंड हैल्थ, पृष्ठ 571) परन्तु सबसे ऊँचा, सबसे प्रेममयी, सबसे ईमानदार तथा सबसे अधिक उपचार करने का तरीका हमारी सोच के साथ शुरू होता है।

इस मुद्दे की सबसे बड़ी व्याख्याओं में से पहाड़ी पर प्रवचन है। जीसस हमें बताते हैं, "पहले तुम अपनी स्वयं की आँख से शहतीर निकालो; और फिर तुम अपने भाई की आँख में से भली भाँति तिनका निकाल पाओगे" (मत्ती 7:5)। वह हमें अपने भाई की आँख में से तिनका निकालने को नजर अंदाज करने को नहीं कहते अपितु वह हमें बताते हैं कि हमारे ध्यान देने से पहले हमें 'स्पष्ट रूप से' देखना चाहिए। क्या यह स्पष्ट देखना ही मानव का ईमानदार दृष्टिकोण नहीं है? क्या यह मानव का 'सही दृष्टिकोण' नहीं है, जो बीमार का उपचार करता है?

याद रखो जब हम किसी को गलती करते हुए देखते हैं—चाहे यह 'हमारी गलती' नहीं है—हमारी अपनी सोच का सुधार करना हमारी जिम्मेदारी है। मेरी बेकर एडी लिखती है "रोग को देखना खीस्तीय रूप से वैज्ञानिक नहीं है। जितना उसे अनुभव करना" (साँयस एंड हैल्थ पृष्ठ 421), और निश्चित रूप से यही सिद्धान्त पाप के लिए लागू होता है। अपनी सोच का सुधार करना और ईमानदारी का अगला गहन कदम उठाना—स्पष्ट रूप से देख कर—सम्पूर्ण मानव को देखना, हमारा कर्तव्य है। इस गहन दृष्टिकोण के साथ हमें उन क्रियाओं को करने का सामर्थ्य मिल जाता है जो आशीषित करती हैं—यहां तक कि उन मुद्दों पर भी जो हमारे नियंत्रण के बाहर प्रतीत होते हैं।

एक चुनौती यह हो सकती है कि जब हम किसी को एक समस्या के साथ या पुरानी गलतियों के साथ संघर्ष करते हुए देखते हैं। क्या कई बार हम अपने आप को सोचते हुए नहीं पाते (जब एक प्रेरक कथन पढ़ते हैं) : "यह जानना उनके लिए अच्छा होगा, या "मैं चाहता हूँ कि वे यह पढ़ें।" चिन्ता न करें! हम इसे दूसरों के लिए या अपने लिए जान सकते हैं। एडी लिखती हैं "जब हम दिव्य के साथ अपने सम्बन्ध को पूरी तरह से समझ जाते हैं हमारा उसके सिवाए और कोई मन नहीं हो सकता, कोई और प्रेम, बुद्धिमता, या सत्य, जीवन की कोई और समझ और भौतिकता या त्रुटि की विद्यमानता की कोई चेतना नहीं हो सकती" (साँयस एंड हैल्थ पृष्ठ 205-206)। हम यह भी जान सकते हैं कि इस बारे में सचेत होना कि परमेश्वर हमें कैसे देखता है, हर एक की पहचान का एक प्राकृतिक हिस्सा है। हम लाचार दर्शक नहीं हैं। हम स्थिति का, एक ईमानदार दृष्टिकोण, परमेश्वर का दृष्टिकोण ले सकते हैं और हम इसके उपचारक प्रभाव की अपेक्षा कर सकते हैं।

संभवतः सबसे चुनौती भरी स्थिति तब है तब हमारे साथ बुरा हुआ हो। यह बुरा एक स्पष्ट रूप से तथा जानबूझ कर किया हो सकता है—विश्वासघात, निंदा, चोरी या धोखा। हम महसूस कर सकते हैं कि दुःखी होना हमारा अधिकार है और इस की क्षति पूर्ति तर्कसंगत भी होनी चाहिए। कोई भी इन्सान यह नहीं कह सकता कि त्रुटि करने वाले को जिम्मेदार न ठहराया जाए। फिर भी इस स्थिति के बारे में ईमानदार दृष्टिकोण सम्पूर्ण उपचार के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

दूसरी तरफ, क्या हो, अगर हम वही है जिसने बुरा किया है तथा अपराध भावना और आत्मनिन्दा की समझ को लम्बे समय से पाल रहे हैं? क्या हम ने पछतावा किया या सुधार किया, या हम अभी भी उस प्रक्रिया में फँसे हुए हैं। शायद अपने आप का ईमानदार दृष्टिकोण प्राप्त करना त्रुटि की जानकारी से परे अगला कदम लेना होता है। ऐसी यह लिखती हैं “... मानसिक आत्म जानकारी ... त्रुटि के उन्मूलन के लिए अनिवार्य है। वह यह भी लिखती हैं, “पाप की त्रुटि या अवास्तविकता को वैज्ञानिक तौर पर प्रमाणित करने के लिए, तुम्हें पहले पाप का दावा देखना होगा और फिर उसे नष्ट करना होगा” (साँयस एंड हैल्थ 462, 461)। यह आत्मजानकारी उस पाप के बारे में जानकारी होने से ज्यादा है जो किया गया था। इन्सानी समझ दावा करती है कि हमारा अपना मन है जो कि परमेश्वर से अलग, अपना अहम तथा अपनी इच्छाशक्ति रखे हुए है। फिर भी सत्य केवल वह है जो परमेश्वर हमारे बारे में देखता है, अपने रूप के बारे में। परमेश्वर हमारा मन हमारा जीवन तथा हमारी अन्तश्चेतना है। यह हमारी पहचान का हिस्सा है इसके प्रति चेतन होना कि वह क्या देख रहा है, हम सब को अपने पापरहित प्रतिबिम्ब की तरह।

सालों पहले, जब मैं एक सैन्य अफसर था, मुझे एक शारीरिक चुनौती थी जो लम्बे समय तक चलती रही। मैंने उस समय में अलग-अलग समय पर कई क्रिश्चियन साँयस उपचारकों की सहायता से प्रार्थना की। उसी समय में, मैं अपनी सोच को भी परख रहा था कि मैं दूसरों को कैसे आँकता हूँ, और महसूस किया कि मैं एक सिपाही के प्रति बुरी भावनाएँ पाले हुए था जो कि मेरी निगरानी में काम करता था। वह अपनी नौकरी में बहुत ही घटिया काम कर रहा था और उसे झूठ बोलने की प्रत्यक्ष समस्या थी।

जैसे मैंने प्रार्थना, की मैंने महसूस किया कि चित्र कितना भी भद्रदा क्यों न हो मुझे उसके बारे में दृष्टिकोण बदलना ही था। मैंने पूरी निष्ठा से इस पर कार्य किया। मैं जानता था कि जो चित्र मैं देख रहा हूँ वह परमेश्वर का अपनी रचना के प्रति दृष्टिकोण नहीं था; इस लिए मुझे इसे ढीला छोड़ना था। चाहे सबूत कितना भी विश्वसनीय क्यों न हो, वैज्ञानिक तौर पर यह सच्चा नहीं था। धीरे-धीरे शारीरिक समस्या जो कि मैं अनुभव कर रहा था, कम होनी शुरू हो गयी तथा परमेश्वर की कृपालु प्रेममयी दयालुता की गहन समझ ने जगह लेनी शुरू का दी।

उसके थोड़ी देर बाद ही, सिपाही गुप्त रूप से मेरे पास आया कहा कि उसे सेना से निकाला जा रहा था यह एक शुक्रवार को हुआ, जब कि नियोजित सैनिक कार्यवाही आने वाले सोमवार तक स्थगित कर दी गई थी। चाहे मैं इस खबर से हैरान नहीं था, मैं इस लिए हैरान हुआ कि वह ऐसी चीज के बारे में मुझ पर विश्वास करेगा जो कि सामान्य तौर पर वह छिपाने की कोशिश करता। इस सिपाही ने फिर भी मेरी सलाह माँगी जो कि उसने पहले कभी नहीं किया था।

ऐडी लिखती है “एक मानव के बारे में कहा गया है, ‘जैसा वह अपने हृदय में सोचता है, वह वैसा है’; इस लिए एक मानव जैसा आध्यात्मिक तौर पर समझता है, वैसा ही वह सत्य में है” (साँयस एंड हेल्थ, पृष्ठ 213)। मैंने सिपाही को बताया कि लोग उसे वैसा ही देखते हैं जैसा वह अपने आप को देखता है।

किसी भी तरह का धोखा या झूठ उसे छिपा नहीं सकता। अगर तुम उसे बदलना चाहते हो जैसे दूसरे तुम्हें देखते हैं तुम्हें अपने बारे में अपनी सोच को बदलना होगा।

मैंने सुझाव दिया कि जब सैन्य अधिकारी उसे किसी नियत समय पर रिपोर्ट करने को कहे कि तब वह दस मिनट पहले रिपोर्ट करे। या अगर सैन्य अधिकारी उसे फर्श साफ करने को कहे, तब भी वह ज्यादा करे, जैसे मकड़ी के जाले साफ करना—सैन्य अधिकारी को प्रभावित करने के लिए नहीं अपितु अपने आप के लिए एक स्तर को नियत करते हुए और उसे पूरा करते हुए, उसे अपने बारे में एक उन्नत सोच रखनी होगी और इस तरह, दूसरे भी ऐसा करेंगे। यह सलाह उसके आत्मसम्मान को बढ़ाने के लिए नहीं थी, यह परमेश्वर की तरफ इस इच्छा से कि क्या सही तथा अच्छा है, एक निःस्वार्थ कदम बढ़ाने के लिए थी। हम जहाँ भी है, सही की अपनी उन्नत सोच तक बने रहने की निःस्वार्थ इच्छा हमारा मार्गदर्शन करती है, अपने बारे में ईमानदार दृष्टिकोण की तरफ—परमेश्वर के दृष्टिकोण की तरफ। उस ने दिल से इस सलाह को माना।

हम स्थिति का, एक ईमानदार दृष्टिकोण, परमेश्वर का दृष्टिकोण ले सकते हैं और हम इसके उपचारक प्रभाव की अपेक्षा कर सकते हैं।

उस सप्ताह, कुछ असाधारण हालातों के कारण, सिपाही की यूनिट के कमांडर को कार्य से मुक्त कर दिया गया और एक नए कमांडर को नियुक्त कर दिया गया। जब सिपाही ने सोमवार को कमांडर के आफिस में सैन्य सेवा से निकाले जाने के लिए रिपोर्ट किया, नए कमांडर ने उसे एक आखिरी मौका देने का फैसला किया। उस पल से लगातार उसका सुधार होता रहा। उसने वह पदवी दोबारा अर्जित की, जो उसने खो दी थी। उसने अपने व्यवहार तथा प्रदर्शन को बेहतर करते हुए कार्यस्थल पर पहले से बढ़िया कार्य किया। फिर उसने सैनिक प्रदर्शन पुरस्कारों के लिए प्रतियोगी बनना शुरू किया। अंत में एक तिमाही सत्र के सैनिक तथा फिर एक वार्षिक सत्र के सैनिक का पुरस्कार जीतते हुए। वह निरन्तर सैन्य अधिकारी की तरह पदोन्नति करता रहा और इससे भी अधिक पुरस्कार प्राप्त किए।

ऐडी लिखती है, “हमें स्वयं का निरीक्षण करना चाहिए और समझना चाहिए कि हृदय की चाहत या उद्देश्य क्या है, क्यों कि केवल इसी तरह ही हम समझ सकते हैं कि ईमानदारी से हम क्या हैं” (साँयस एंड हेल्थ, पृष्ठ 8)। जब हम अपने आप का (तथा दूसरों का) निरीक्षण करते हैं आओ हम देखें कि हम परमेश्वर के दृष्टिकोण में सम्मानजनक तथा अमूल्य हैं। यही हम ईमानदारी से हैं। और यही स्पष्ट दृष्टिकोण उपचार करता है और उत्थान करता है।